

# मेरे प्रिय शिक्षक की छवि मुझे बच्चों के साथ काम करने को प्रेरित करती है

शिक्षक लालाराम विश्वकर्मा के साथ अंजना त्रिवेदी की बातचीत



चित्र : बिन्दु जैन

**अंजना** : लालाराम जी, व्यक्तिगत जीवन के बारे में विस्तार से बताइए।

**लालाराम** : मेरा जन्म 1 दिसम्बर, 1960 में विदिशा ज़िले के कागपुर गाँव में हुआ जहाँ मात्र एक प्राथमिक विद्यालय था। कक्षा पाँच के बाद पास के ही गाँव गढ़ला से मैंने कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा पूरी की। तत्पश्चात अपने गाँव से नटेरन जाना पड़ा जो सड़क मार्ग से लगभग 6 किलोमीटर दूर है। उस समय बसों बहुत कम चलती थीं और हम विद्यार्थियों के लिए तो वह लगभग सपने की सवारी थी। अतः हम गाँव के सभी विद्यार्थी एक समूह में नदी पार करके रोज़ स्कूल आना-जाना करते थे। मैं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नटेरन के उस शुरुआती समय का विद्यार्थी रहा, जब

न तो स्कूल भवन था और न ही सभी विषयों को पढ़ाने वाला पर्याप्त स्टाफ़। कक्षाएँ मन्दिर के दालान में पीपल के चबूतरे और ऐसे ही कहीं खाली पड़े मैदान में लगा करती थीं। विषम मौसम में कक्षाओं का लगना तो क्या, सिर छुपाने की जगह भी बमुश्किल मिलती थी। जैसे-तैसे कक्षा 9वीं उत्तीर्ण की। ग्रामीण क्षेत्र का विद्यालय था, अतः विद्यार्थी केवल कला संकाय की ही शिक्षा प्राप्त कर पा रहे थे। कला संकाय के साथ हिन्दी में मेरी रुचि पैदा करने वाले प्रेरणास्रोत श्री जगदीश चंद्र गौड़ प्राचार्य थे। उनकी पठन-पाठन की शैली बड़ी मनमोहक और हृदयग्राही थी। भूगोल की ओर रुचि जागृत करने का श्रेय शिक्षक जुगल किशोर गुप्ताजी को है जिनकी सादगी से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ। गुप्ताजी ने

भूगोल के प्रारम्भिक ज्ञान से ओतप्रोत करके, उसके प्रति जिज्ञासु बना दिया। संयोग की बात है कि एलबीएस कॉलेज गंज बासौदा में भूगोल के प्रोफ़ेसर श्री पारसमल दासोत जहाँ अपने विषय के मर्मज्ञ और ज्ञाता थे, वहीं कठिन-से-कठिन अवधारणाओं को बेहद सरल ढंग से समझाने में भी पारंगत थे। भूगोल के पेचीदा प्रश्नों, सर्वेक्षण के अनुरेखण, चित्र-मानचित्र, आदि के कठिन बिन्दुओं को सरलता से समझाने में गुणी थे। इसके अलावा विविध कलाओं, जैसे-कोयले के पत्थर पर मूर्तियाँ बनाना, लकड़ी के विभिन्न आकार-प्रकारों में आकृतियाँ निरूपित करना, सूक्ष्म चित्रों से लेकर बड़े कैनवास पर चित्रकारी के भी जानकार थे। साहित्य में भी अपनी लघु कथाओं और क्षणिकाओं के लेखन में ख्याति प्राप्त लेखक थे। उनकी रचनाएँ हिन्दी भाषा के अतिरिक्त कई अन्य भाषाओं में अनूदित

की गरिमा बनाए रखते हैं। शिक्षक और बच्चे दोनों एक दूसरे के छोटे-छोटे कामों को बखूबी देखते और उनसे सीखते हैं। अपने शिक्षक से जिस प्रकार मैंने सीखा उस तरह मैं अपने स्कूली बच्चों को सिखाना चाहता हूँ। मेरे शिक्षक ने मुझमें जिज्ञासा पैदा कर अपने संचित ज्ञान को बाल मनोविज्ञान के अनुरूप ट्रान्सफ़र करने की कला दी है।

यह वह दौर था जब *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* जो बात आज कहती है, वह 70 के दशक के शिक्षक कर रहे थे। जैसे- ज्ञान को विद्यालय से बाहर परिवेश के साथ जानना-समझना, उसे जीवन के साथ जोड़ना सुनिश्चित करना ताकि अधिगम रटने की विधियों से परे हो, पाठ्यचर्या को समृद्ध बनाना ताकि यह पाठ्यपुस्तकों पर केन्द्रित न रहकर बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सके, और परीक्षाओं को अधिक लचीला बनाना व कक्षा-कक्ष के साथ समेकित करना।



चित्र : पारुल बत्रा

उस दौर की एक और बात गौर करने लायक है कि मेरे गाँव में लोगों को उपन्यास पढ़ने का बड़ा शौक था। यही वजह रही कि मेरा रुझान भी उपन्यास पढ़ने की ओर हो गया। विदिशा के तिलक चौक पर सार्वजनिक वाचनालय का स्थाई सदस्य बन गया और उसमें पढ़ी किताबों पर हम गाँव के लोगों और शिक्षक बिरादरी में चर्चा होती थी। उपन्यास की इस लत ने मुझसे हिन्दी में स्नातकोत्तर करवा लिया। अब गाँव हो या शहर, दोनों जगह ऐसा माहौल देखने को नहीं मिलता है।

हो रही थीं। ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी दासोत सर से मैं काफ़ी प्रभावित हुआ और भूगोल की प्रायोगिक गतिविधियों में, विशेष रूप से अपने कला कौशल में, दक्षता प्राप्त करने लगा। जो कुछ मैंने अपने शिक्षकों से सीखा, वही मैं अपने स्कूली बच्चों को देने का पूरा प्रयास करता हूँ।

बाद में मैंने भूगोल में स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की। मैं गाँव वालों की नज़र में मास्टर ही नहीं, बल्कि सलाहकार भी बन गया था। सुबह से स्कूल पहुँच जाता था। स्कूल दालान

मेरा मानना है कि एक अच्छे शिक्षक की छवि आपके मन में जीवनपर्यन्त बनी रहती है। उस छवि के प्रकाश में आप अपने शिक्षक कर्म

में ही लगता था। मैं अपने नित्य क्रियाकलापों से निवृत्त होकर कक्षा लगाता और सूर्य डूबने तक बच्चों को पढ़ाता था। बच्चा चाहे कितनी ही बार खाना खाने, पानी पीने अथवा अन्य कारणों से अल्प अवकाश लेकर कक्षा से बाहर जाने के लिए सहज स्वतंत्र था। शासकीय टाइम टेबल का पालन नहीं हो रहा था। यहाँ तक कि रविवार को भी स्कूल लगता था। पढ़ाना मेरा नशा हो गया था। बच्चे खूब पढ़ रहे थे।

इस पढ़ाई में बच्चों के साथ उन्हें धरती की बनावट, जैसे— ऊँची-नीची जगह, पठार, झील, सूर्योदय और सूर्यास्त, बरसात में बनता हुआ इन्द्रधनुष दिखाने बाहर चला जाता था। बस्ती के आसपास के खेत-खलिहान ही हमारे शैक्षणिक भ्रमण के उत्तम पर्यटन स्थल थे। उस समय सोशल मीडिया नहीं था। गाँव में बच्चों से शराब और जुए जैसे मुद्दों पर भी बात करते और बड़े-बुजुर्ग ऐसे लोगों को हमारे पास लेकर आते थे कि इनकी यह लत छोड़वा दीजिएगा। इस तरह के कामों से मुझे एक ज़िम्मेदारी महसूस हुई और इस ज़िम्मेदारी ने मुझे अच्छा शिक्षक बनाने में मदद की थी। लोगों के व्यसन छोड़वाने के लिए मैंने अनूठे प्रयास किए, जिसमें एक हद तक सफल भी हो पाया।

**अंजना :** आपके शिक्षक पदस्थापना दौरान के कुछ रोचक अनुभव बताइए।

**लालाराम :** सरकारी बिरादरी में अलग-अलग जगहों पर पदस्थापना आम बात है। शिक्षकों के साथ यह घटता रहता है। हम सब जानते हैं कि छोटे गाँव में बड़े लोगों का काफ़ी दबदबा रहता है। उसी प्रकार हिनोतिया गाँव में प्रभावशाली व्यक्तियों का दबदबा हमेशा से रहा है। ऐसे ही एक प्रभावशाली व्यक्ति ने अपने बेटे को स्कूल तो भेजना शुरू किया किन्तु वह नहीं चाहते थे कि उनका बच्चा आम बच्चों जैसा दिखाई दे। मैंने जब विद्यालय में यूनिफ़ॉर्म कम्पल्सरी की तो उस बच्चे को छोड़कर सारे विद्यार्थियों ने

यूनिफ़ॉर्म बनवा ली और सभी अपने सुसज्जित परिधान में विद्यालय आने लगे। दुविधा थी कि बच्चे के पिताजी को कैसे कहें कि वह यूनिफ़ॉर्म बनवा दें। किसी भी शिक्षक की यह कहने की हिम्मत नहीं थी। इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु मैंने एक कहानी लिखी और बच्चे के हाथ से



चित्र : बिन्दु जैन

उनके पिताजी को पढ़ने के लिए भेजी। मुझे डर लग रहा था कि शायद स्कूल आकर वह मेरा अपमान करें अथवा अन्य आशंका से मैं भयभीत हो रहा था। परन्तु कहानी का असर यह हुआ कि वह इस बात से सहमत हो गए कि उनका बच्चा भी स्कूल यूनिफ़ॉर्म में ही स्कूल आएगा।

**अंजना :** आपने ग्रामीण बालिकाओं के स्कूल में क्या विशेष किया?

**लालाराम :** सन् 2003 में मेरा ट्रान्सफ़र चितोरिया मिडिल स्कूल में हो गया। उस समय सुधा चौधरी ज़िला कलेक्टर, अनुराधा शंकर सिंह एसपी और राजश्री सिंह ज़िला पंचायत अध्यक्ष थीं। इन तीनों महिलाओं ने विदिशा ज़िले के चितोरिया गाँव का कायाकल्प कर दिया था। राजश्री सिंहजी से विद्यालय में महिला शौचालय बनवाने हेतु आग्रह किया तो उन्होंने तुरन्त स्वीकृति दे दी। शौचालय बनते ही गाँव की लड़कियों ने स्कूल में बड़ी संख्या में प्रवेश लिया।

कई बार पिछले पन्ने पलटकर अपनी ज़िन्दगी देखने पर पाता हूँ कि मैं शिक्षक ही

बनना चाहता था, क्योंकि मैं अपने शिक्षकों से अत्यधिक प्रभावित था। उनको अपना आदर्श मानता रहा। उनके जैसा शिक्षक बनने की अभिलाषा हृदय में सजीव कर रखी थी। शासन ने मेरी योग्यता को परखा और समाज ने मेरे कामों को स्वीकार किया। अपने शिक्षकीय दायित्व से मैं प्रसन्न और सन्तुष्ट हूँ।



चित्र : पारूल बत्रा

**अंजना :** अपनी शिक्षण पद्धति और नवाचारी गतिविधियों के बारे में कुछ बताइए।

**लालाराम :** सन् 2005 में मेरा ट्रान्सफ़र शासकीय माध्यमिक विद्यालय, गढ़ला हो गया। यह वही विद्यालय है जहाँ से मैंने कक्षा 6 से 8 तक पढ़ाई की थी। मेरे मनोभाव में उमंगों के पंख लग गए थे कि जहाँ मैं पढ़ा था, वहीं पढ़ा रहा हूँ। अपने शिक्षकों के सारे शैक्षणिक क्रियाकलाप मेरे मानस पटल पर उभरकर आते थे। स्मृतियाँ निरन्तर ऊर्जा का संचार करती रहीं। तभी प्राइमरी स्कूलों में एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग (एबीएल) और मिडिल स्कूलों में एएलएम प्रोग्राम संचालित किए जाने लगे थे। शाला परिसर में बने नवीन कक्ष को मैंने एबीएल के लिए सभी दिशा-निर्देशों का पालन करते

हुए और उसमें कुछ नवाचारी गतिविधियों को सम्मिलित कर ऐसा सुसज्जित किया कि जो देखता, दंग रह जाता। यहीं मैंने एक कमरे की दीवारों पर उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, ऑस्ट्रेलिया, भारत और मध्य प्रदेश के भौतिक व राजनीतिक मानचित्रों को पेन्ट से चित्रित करा दिया। विज्ञान, गणित और भाषा की विभिन्न अवधारणाओं को दीवारों के शेष बचे भाग पर सूत्र शैली में सँजो दिया। पूरे विद्यालय भवन की दीवारों के ऊपरी भागों पर पट्टिका निर्मित कर उसपर सूत्र वाक्यों का अंकन कर दिया। विद्यालय धीरे-धीरे ज़िले में प्रसिद्धि पाने लगा और अधिकारियों के दौरों का सिलसिला चालू हो गया। मैं प्रोत्साहन और शाबाशी से गदगद हो रहा था। इस क्रम में मुझसे एक भारी भूल होने लगी कि मैं शैक्षिक कार्य छोड़कर ऐसे ही अन्य कार्यों में रुचि लेने लगा, यहाँ तक कि आसपास के विद्यालयों की एबीएल एवं एएलएम कक्षाओं के कक्ष सजाने में सलाहकार का काम करने में मैं अपने-आपको गौरवान्वित अनुभव करने लगा।

इसी दौरान सहायक शिक्षक से सामाजिक विज्ञान के उच्च श्रेणी शिक्षक के पद पर पदोन्नत होकर अपने गृह निवास कानपुर के हाई स्कूल में मेरा पदांकन हो गया। स्कूल में शिशुपाल सिंह जाटव, प्राचार्य का सान्निध्य मिला, जो काफ़ी अनुशासित एवं अपने कार्य के लिए प्रतिबद्ध हैं। अब मैं एक परिपक्व शिक्षक के रूप में अपनी नवाचारी शिक्षण गतिविधियों के साथ कर्मशील हो गया। शाला भवन पठार पर था और मैदान के लिए मेरे मित्र सौदान सिंह ने बोल दिया था कि जितनी ज़मीन की आवश्यकता हो उतनी ज़मीन सीमांकन कर फेंसिंग करवा लो। मैंने ऐसा ही कर उस पथरीले पठार पर पौधारोपण करवा दिया। इस विद्यालय में रहकर मुझे प्रतिभा प्रदर्शन के अनेक अवसर मिले जिनमें इंस्पायर अवॉर्ड के तहत बच्चों के साथ मिलकर तरह-तरह के मॉडल बनाकर प्रस्तुत किए और उनका चयन ज़िला स्तर तक हुआ।

अंजना : आप सामाजिक विज्ञान के शिक्षक रहे हैं, इस विषय को पढ़ाने का आपका क्या दृष्टिकोण है?

लालाराम : सामाजिक विज्ञान कोई एक विषय न होकर बहुत सारे विषयों का एक समूह है, जिसमें इतिहास, नागरिक शास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र, पर्यावरण, समाजशास्त्र, गणित, आदि का व्यवहारिक उपयोग समाहित है। यही कारण है कि सामाजिक विज्ञान पढ़ाने के लिए विभिन्न शिक्षण पद्धतियों की आवश्यकता महसूस होती है। जहाँ तक मेरे पढ़ाने का ढंग है, मैं समाज विज्ञान को शिक्षक केन्द्रित न मानकर विद्यार्थी केन्द्रित मानता हूँ। विद्यार्थियों के मध्य और विद्यार्थियों के माध्यम से सम्पन्न होने वाली गतिविधियों का उपयोग करके अवधारणाओं को स्पष्ट करने का प्रयास करता हूँ।

इतिहास को पढ़ाने में क्रिस्से-कहानियों को ऐतिहासिक सन्दर्भों के माध्यम से सुनाने और उस तरह की वर्तमान में यदि कोई घटना घटित होती है तो दोनों में उस काल के परिप्रेक्ष्य और आज के परिप्रेक्ष्य में अन्तर्सम्बन्ध स्थापित कर उनको रोचक बनाने का प्रयास करता हूँ। नागरिक शास्त्र वर्तमान का शास्त्र है जिसमें किसी देश के नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए शासन और समाज दोनों की सक्रिय भागीदारी को कक्षा में विभिन्न गतिविधियों द्वारा समझने का प्रयास करते हैं। नियुक्त विद्यार्थी-मंत्रियों का चुनाव प्रत्यक्ष मतदान प्रणाली के द्वारा सम्पन्न कर, गठित विद्यार्थी मंत्रिमण्डल के निर्माण से लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझाया जाता है।

भूगोल को विभिन्न पेडागॉजी के माध्यम से समझाना सुगम होता है, जैसे- शैक्षणिक भ्रमण के समय ऐसे स्थान पर जाना जहाँ पर्वतीय, पठारी और मैदानी भूमि के दृश्य दिखाई देते हों।

विद्यार्थियों को इन भू-आकृतियों को समझना एवं उनमें परस्पर अन्तर कर पाना आसान होता है। भ्रमण के दौरान विभिन्न प्रकार की चट्टानों, मिट्टियों की पहचान और उनमें पैदा होने वाली उपजों का दृश्य, फ़सल वितरण की अवधारणा आदि सीखना आसान होता है। नदियों के मार्ग में उनसे बनी भू-आकृतियों, जैसे- विसर्प आदि, को समझना सुगम होता है।

ग्लोब और मानचित्र के माध्यम से अक्षांश व देशान्तर रेखाओं के संजाल को समझाना, उनकी संख्या और प्रकृति को स्पष्ट करना कि अक्षांश पूर्ण वृत्त और देशान्तर अर्धवृत्त क्यों होते हैं? जहाँ अक्षांशों के मध्य समानान्तर दूरी होती है वहीं भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर बढ़ने पर देशान्तरों के मध्य दूरी घटती जाती है और ध्रुवों पर शून्य तक हो जाती है। इस तरह ग्लोब को



चित्र : बिन्दु जैन

देखकर पृथ्वी के गोलाकार होने के अनुमान से बच्चे अक्षांश-देशान्तर की इन प्रवृत्तियों को सहज ही सीख जाते हैं। इन रेखाओं के माध्यम से किसी स्थान की स्थिति, उसका अक्षांशीय व देशान्तरीय विस्तार, उसकी चतुर्दिक सीमाएँ, आदि बच्चों के मन-मस्तिष्क में उस क्षेत्र की पहचान का स्थाई अंकन करने में सफल हो जाती हैं। समोच्च रेखाओं के प्रायोगिक कार्य से बच्चे किसी स्थान की वास्तविक ऊँचाई व गहराई का ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं और वे

समोच्च रेखाओं की उपयोगिता के महत्त्व को समझ पाते हैं।

ग्लोब के माध्यम से ताप कटिबन्ध और इससे जलवायु का निर्धारण व उस जलवायु में मानव जीवन की विभिन्न दशाओं को समझाना आसान होता है। विभिन्न आरेखों, मानचित्रों और चित्रों के माध्यम से जनसंख्या, वनस्पति, खनिजों, आदि के वितरण और आयात-निर्यात को इस पेडागॉजी के माध्यम से समझाना रुचिकर होता है। विद्यार्थियों को रूढ़ चिह्नों का अंकन व उनकी व्यवहारिक उपयोगिता को भी शैक्षिक भ्रमण में आसानी से सिखाया जाता है। सड़क पर बने हुए पुलों, घाटों, विभिन्न तरह के मोड़ों, सड़क, पशुओं की आवाजाही, आदि को विभिन्न रूढ़ चिह्नों और यातायात में उपयोगी संकेतों को समझकर वे दुर्घटनाओं से बच सकते हैं।

अंजना : लाम्बाखेड़ा मिडिल स्कूल में आते ही आपने कुछ महत्त्वपूर्ण काम करवाए, उनके बारे में संक्षिप्त में बताइए।

लालाराम : 2014 में मैं ट्रान्सफर होकर शासकीय माध्यमिक विद्यालय लाम्बाखेड़ा, भोपाल आ गया। यहाँ स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की स्थानीय शाखा से बात करके बच्चों के लिए छह कम्प्यूटरों की व्यवस्था करवाई। स्कूल में शौचालय बहुत पुराना था और आवश्यक सुविधाएँ भी नहीं थीं; इसके लिए नेस्ले कम्पनी से सम्पर्क किया और सर्व सुविधायुक्त शौचालय बनवाया। बच्चों की तादाद देखते हुए स्कूल में फ़र्नीचर की कमी थी, इसके लिए केनफ़िन बैंक से सभी कक्षाओं और कार्यालय के लिए फ़र्नीचर की माँग की। उन्होंने आकर पहले सत्यापन किया और फिर आवश्यक फ़र्नीचर उपलब्ध करा दिया। इसी तरह, दूसरे दानदाताओं के माध्यम से आरओ वाटर फ़िल्टर, वाटर कूलर, लाइब्रेरी के लिए 25 हज़ार रुपए की पुस्तकों और 2 बुक शेल्फ़ से विद्यालय को लाभान्वित करवाने में सफल रहा।

अंजना : आप अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की सामाजिक विज्ञान टीम के साथ सम्बद्ध रहे और

अलग-अलग मौकों पर सहभागिता भी की है। शैक्षिक यात्रा में इस तरह के जुड़ाव को आप कैसे देखते हैं?

लालाराम : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से सम्पर्क होने के बाद सामाजिक विज्ञान विषय को समझने व कक्षा में समझाने के मेरे तरीकों में और भी बदलाव आए। इसी दरम्यान अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के दिशा-निर्देशों के अनुपालन में शासकीय माध्यमिक विद्यालय लाम्बाखेड़ा में नवम्बर 2019 में बाल शोध मेले का आयोजन करने का निश्चय किया। बाल शोध मेले के लिए विभिन्न अवधारणाओं को क्लियर करने हेतु मॉडल की तैयारी करना पहला अनुभव था।

बाल शोध मेला पूरी तरह विद्यार्थियों पर केन्द्रित था। मुझे केवल एक सहयोगी की भूमिका में कार्य करना था। बाल शोध मेले की तैयारी जुलाई से ही होने लगी थी, जिसमें कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों ने सौरमण्डल, सूर्यग्रहण व चन्द्रग्रहण, पेरिस्कोप, आदिमानव के हथियार, पृथ्वी के ताप कटिबन्ध, भारतीय मसालों का स्वाद, ज्वालामुखी, मानव विकास की शृंखला, भारत के प्राचीन ग्रन्थ, संविधान प्रदत्त मौलिक अधिकार और मूल कर्तव्य, पवन दिशासूचक, पर्वत, पठार, मैदान और नदियों के मॉडल, समोच्च रेखाओं पर आधारित भू-आकृतियाँ, भारतीय संसद का मॉडल, पृथ्वी की घूर्णन गति : दिन और रात का होना, ऋतु परिवर्तन : कारण और परिणाम, चन्द्रमा की चन्द्र कलाओं के अनुक्रम में अमावस्या और पूर्णिमा की स्थिति, विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ और उनके पाए जाने का स्थान व उनमें पैदा होने वाली फ़सलों का विवरण, विभिन्न प्रकार की फ़सलों के उत्पादन, ग्लोब पर अक्षांश व देशान्तर रेखाओं को प्रदर्शित करने वाला मॉडल, चट्टानों के प्रकार, अमेज़न बेसिन में जीवन, सड़क सुरक्षा, विभिन्न ताप कटिबन्धीय प्रदेशों में मानव, खरीफ़, तिलहन, नगदी और व्यापारिक फ़सलों के विवरण, भारत के मानचित्र में राज्यों का संयोजन करने वाला मॉडल, आदि बनाकर प्रदर्शित किए।

मॉडल तैयार करने वाले बच्चों ने अवधारणाओं की बखूबी व्याख्या की और अन्य बच्चे इनके सहयोगी के रूप में बढ़-चढ़कर भाग ले रहे थे। जोश ऐसा था कि इन बच्चों के साथ मैंने भी बाल शोध मेले की तिथि तक किसी भी शासकीय अवकाश के दिन काम बन्द नहीं रखा। बच्चों में ग़ज़ब का उत्साह था। आज भी मैं फ़ाउण्डेशन द्वारा आयोजित विभिन्न शैक्षिक विमर्शों में शामिल होता हूँ, इससे नई दृष्टि मिलती है। शिक्षकों को अपने ज्ञान और नज़रिए को तराशते रहना चाहिए।

**अंजना :** इस बाल शोध मेले से आपको कुछ नया सीखने को मिला या कोई नया अनुभव हुआ हो तो उसके बारे में बताएँ।

**लालाराम :** इस दौरान मैंने बच्चों के साथ काम करते-करते बहुत-सी बातें सीखीं। जिन कामों को करने में मैं कठिनाई अथवा उलझन अनुभव कर रहा था, उन्हीं को करने के लिए बच्चों के अपने सृजनशील मस्तिष्क में सहज ही अनूठे विचार थे। उनके कार्य करने के ढंग ऐसे थे कि विकट समस्या भी यँ ही हल हो जाती थी।

इस कड़ी में बच्चों द्वारा पत्थर, लकड़ी, मिट्टी आदि के आदिमानव सदृश हथियारों, दैनिक उपयोग में लाए जाने वाले बर्तनों का निर्माण करने, पृथ्वी के ग्लोब को अपने अक्ष पर 23.5 अंश पर झुकाने के लिए उल्टे गिलास में मिट्टी भरकर अक्ष को तिरछा सेट करने के विचार, आदि चौंकाने और उत्साहित करने वाले क्षण रहे। विभिन्न टॉपिक पर नए-नए मॉडल बनाने के हमारे सपनों को पंख लग रहे थे। बाल शोध मेले की तैयारी एवं उसके सम्पन्न होने के उपरान्त इस तरह की कार्य विधि से हम सभी शिक्षक और विद्यार्थी विषय की अवधारणाओं को सहज और सरल करने में सफल होकर प्रसन्नता अनुभव कर रहे थे। इस बाल शोध मेले की तैयारी एवं उसके सम्पन्न होने के दरम्यान मेरा विचार पुरखा हो गया कि शिक्षक विद्यार्थियों के सीखने में केवल

सहयोगी की भूमिका में ही होता है। सीखने की क्षमता तो बच्चों में स्वयं होती है। शिक्षक अपने शैक्षणिक कौशलों से उन क्षमताओं को बच्चों के मन-मस्तिष्क से उत्सर्जित कर साधने-सँवारने का कार्य करते हैं। साथ ही विभिन्न बच्चों के मध्य अलग-अलग स्थितियों में अपने शिक्षण कौशल को भी परिमार्जित करते जाते हैं।

**अंजना :** डाइट, भोपाल और फ़ाउण्डेशन द्वारा ‘सामाजिक विज्ञान एवं पर्यावरण अध्ययन’ विषय पर आयोजित ‘सेमिनार’ में आपने भी अपना परचा प्रस्तुत किया था। उससे जुड़े कुछ अनुभव साझा करें।



चित्र : पारूल बत्रा

**लालाराम :** साल 2018 में यह पहला अवसर था जब मैं डाइट में अपना परचा पढ़ रहा था। मुझे अपने सेवाकाल में विभिन्न कक्षाओं को पढ़ाने का मौक़ा मिला, लेकिन कक्षा शिक्षण से जुड़े अनुभवों पर गहराई से विचार करके, विश्लेषण करके लिखना और फिर उसे प्रस्तुत करना, यह कभी किया ही नहीं था।

कक्षा 8 के भूगोल विषय के अध्याय 'धरातलीय स्वरूप' को बच्चों के साथ उनकी बनाई हुई अनुकृतियों (मॉडल) के माध्यम से तीन दिनों तक पढ़ाया। बच्चों की सहभागिता, रचनात्मकता और कल्पनाशीलता देखने लायक थी। बच्चों के सवाल और किसी विषय पर उनके तर्क और विचारों से मुझे भी नई दृष्टि मिल रही थी। हर बच्चे के काम और उसकी प्रक्रिया को सिलसिलेवार ढंग से दस्तावेज़ किया। बच्चों ने जो सवाल किए, स्पष्टीकरण दिए, वह सब शब्दशः लिखा। मैं जो समझा और बच्चों से जो बात की, उसे लिखता गया। यह सब व्यवस्थित रूप से एक सेमिनार के परचे के हिसाब से लिखना मेरे लिए सबसे ज़्यादा चुनौतीपूर्ण रहा। फ़ाउण्डेशन के स्रोत व्यक्तियों की मदद से मैं उसे परचे के रूप में लिख पाया। कई ड्राफ़्ट लिखे, उनमें संशोधन किया तब कहीं जाकर वह सेमिनार में पढ़ने लायक बन सका।

अगली चुनौती डाइट के सभागार में सभी के समक्ष परचे को पढ़कर प्रस्तुत करने की थी। लेकिन कक्षा शिक्षण की प्रक्रिया, बच्चों के सीखने की गति और उनकी प्रतिक्रिया इतनी प्रभावी थी कि मुझमें वह दस्तावेज़ पढ़ने का ज़बरदस्त आत्मविश्वास आ गया था। प्रस्तुति से पहले एक-दो बार मैंने परचा पढ़ा, उसके क्रम और प्रवाह पर साथियों से बातचीत की, इस तरह अच्छे से परचा प्रस्तुत कर पाया।

यह सब मेरे सेवाकाल में एक नया अनुभव जोड़ गया।

अंजना : शिक्षकीय सेवाकाल के उत्तरार्ध में अपने काम को लेकर आप क्या सोचते हैं?

लालाराम : मध्य प्रदेश सरकार ने उच्च अधिकारियों के साथ हम सभी चयनित शिक्षकों को कन्याकुमारी स्थित विवेकानंद आश्रम में 7 दिन की वर्कशॉप हेतु भेजा। वह मेरे उन्मुखीकरण का एक स्वर्णिम अवसर था जहाँ पूरे मध्य प्रदेश के चयनित शिक्षकों और उत्कृष्ट विद्यार्थियों से मेल-मिलाप के दौरान बहुत कुछ सीखने को मिला। किन्तु मेरा जो समय बच्चों को पढ़ाने के लिए जाना चाहिए था वह प्रशासन को ख़ुश करने में जाने लगा, इस बात का मुझे ग़म है। यह एक सरकारी तंत्र में काम करने का चक्रव्यूह है जिसका मैं भी शिकार हुआ हूँ। किन्तु जैसे ही ठहरकर आप अपने काम पर रिफ़्लेक्शन करते हैं तो असल में पाते हैं कि आप क्या कर रहे हैं। आपके काम का फ़ायदा सचमुच ज़रूरतमन्दों को मिल रहा है या नहीं, इसके लिए शिक्षक का रिफ़्लेक्टिव होना अत्यन्त आवश्यक है।

अंजना : आपने समय दिया और खुद के व काम के बारे में इतनी गहराई और विस्तार से बात की, इसके लिये धन्यवाद।

---

लालाराम विश्वकर्मा ने बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल से भूगोल और हिन्दी स्नातकोत्तर किया है। साथ ही आपने डीम्ड विश्वविद्यालय, इलाहाबाद से एजुकेशन में भी एमए किया है। शिक्षक के रूप में 1979 से अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। शिक्षक संगोष्ठी 2011 में उन्हें प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था। वर्तमान में शासकीय माध्यमिक विद्यालय लाम्बाखेड़ा, भोपाल में उच्च श्रेणी शिक्षक के पद पर पदस्थ हैं और शिक्षकीय जीवन के चार दशक का सेवाकाल पूर्ण कर चुके हैं।

सम्पर्क : lalaramvishwkarma25@gmail.com

अंजना त्रिवेदी विगत ढाई दशकों से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ ही पत्र-पत्रिकाओं के लिए सतत लेखन रहा है। महिला स्वास्थ्य, शिक्षा एवं नागरिक अधिकार इनके प्रमुख विषय रहे हैं। अंजना वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, भोपाल, मध्य प्रदेश में सामाजिक विज्ञान स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : anjana.trivedi@azimpremjifoundation.org